प्रकाश की गति उल्टी हो जाती है। इसी से पदार्थ तत्व गतिमान हो जाता है प्रकाश तत्व इसका भेदन कर आगे निकल जाये उससे पूर्व पदार्थ तत्व प्रकाश से प्राप्त गति से घूम जाता है जिसके कारण रात्रि हो जाती है और प्रकाश तत्व दूसरी दिशा में चला जाता है, इसी लुका-छिपी के खेल से सृष्टि का निर्माण होने लगता है। इस निर्माण में जिसका कार्य पूरा हो जाता है वह छूट जाता है और अन्धेरे का रूप ले लेता है। यह जीवन निर्माण की आवश्यकता है इसी से जीवन निर्माण पूरा होता है पर जिस प्रकार मानव अपने खाने योग्य पदार्थ ईंधन लगाकर चूल्हे पर बनाता है जिधर लौ निकलती है उधर पकने वाला पदार्थ रखता है। तब यह सही पक पाता है। यदि वह लौ निकलने की जगह ईंधन लगाने लगता है तो ऊर्जा बिखर जाती है और पदार्थ सही पक नहीं पाता है। ठीक इसी प्रकार जब मानव खुद परिस्थिति से प्रभावित होकर नकारात्मक सोचने लगता है तो ईंधन लौ की तरफ लग जाता है। जिससे ऊर्जा बिखरने लगती है और जीवन का विकास सही गति से नहीं हो पाता है। जिससे जीवन की घड़ी कभी तेज कभी धीमी गति से चलने लगती है। परिणाम स्वरूप शरीर का तापमान प्राकृतिक नही रह पाता है और अनेको बिमारियॉ पैदा होने लगती है। जीवन की गति असामान्य हो जाती है व्यक्ति जीता तो है पर उमंगहीन होकर प्रकृति में प्रदूषण छोड़ने लगता है। ऐसा होने से व्यक्ति का साहस कमजोर होने लगता है। इच्छाशक्ति से निकलने वाली ऊर्जा की ताकत घटने लगती है जिसके कारण से नकारात्मक ऊर्जा आस-पास बढ़कर घेरा बना लेती है जो ध्यान या स्वप्न में जिस स्वरूप से नकारात्मक ऊर्जा निकली होती है उस स्वरूप में दिखने लगती है। जिससे व्यक्ति डर कर नकारात्मक सोच में डूबने लगता है और लौ की तरफ से लगने वाला ईंधन बढ़ने लगता है। नकारात्मक ऊर्जा की मात्रा ज्यादा हो जाती है। व्यक्ति के अंदर अनेको बिमारियों के साथ तनाव, अनिद्रा, रक्तचाप का कम ज्यादा होना स्वाभाविक रूप से बढ़ जाता है। जिसे परीक्षा, अन्याय समझते हुए परमात्मा को कोसकर सहयोगी ऊर्जा को भी अपने से दूर करता चला जाता है। उसे यह पता नहीं होता है कि इसमें किसी का दोष नहीं है बल्कि खुद जीवन की गाड़ी चलाने में गलत तकनीक लग गयी है। गाड़ी की गलत दिशा में चले जाने के बाद व्यक्ति अत्याधिक मात्रा में भावनात्मक प्रदूषण की ऊर्जा छोड़ने लगता है जो आस-पास के लोगों के अन्दर श्वशन क्रिया के माध्यम से जाकर प्रभावित करने लगती है और प्रकृति में प्रदूषण की मात्रा बढ़ने लगती है। जिसका परिणाम सबके सामने है हर दस व्यक्ति में नौ बिमार होने लगा है। प्रकृति में अन्य जीव प्रदूषण नहीं छोड़ते है बल्कि प्रदूषण को खत्म करने के लिए ही उनकी उत्पत्ति होती है। इसीलिए उनके अंदर बिमारियां बहुत कम होती है। मानव प्रदूषण बनाने की मशीन न बन जाये, उसके लिए जीवन की गाड़ी चलाने की तकनीक जानना आवश्यक है और वह है ईंधन को लौ की तरफ से उल्टा न लगने देना। जो नकारात्मक सोच न बनने देने से ही सम्भव है। इसक बाद ता रूकावट पैदा करने वाली हर परिस्थितियॉ ईंधन बनकर समय चक्र के घर्षण से जलती रहेगी और अपने जीवन का निर्माण और मजबूती से होता रहेगा साथ में उस घर्षण से पैदा होने वाले प्रकाश से अपना मार्ग स्वतः दिखायी पड़ता रहेगा।

वैचारिक ऊर्जा चक्र मस्तिष्क में होता है। जिसे ऊर्जा चित से मिलती है। यह चक्र वाह्य ऊर्जा चक्र से घर्षण करता है। वाह्य ऊर्जा चक्र में विषय, परिस्थिति और व्यक्ति होता है। इस चक्र की और वैचारिक ऊर्जा चक्र की ऊर्जा जब समान हो जाती है तो व्यक्ति की गति तेज हो जाती है। यही वह पल होता है जब व्यक्ति बिलकुल सही बोलने लगता है। जो लोग कहते है कि २४ घंटे में एक बार सरस्वती जुबान पर आ जाती है। पर जब क्रोध के विषय की गति समान हो जाती है क्रोध चरम पर पहुँच जाता है। यह परिस्थिति तुफान की तरह होती है जो जीवन को उजाड़ देती है। जिस प्रकार तुफान ज्यादा देर तक नही रूकता है ठीक उसी प्रकार यह वेग भी उस समय आगे निकल जाता है। जब कोई विचार न पैदा होने दे और अपनी गति को सामान्य कर ले तो यह गति तुफान की तरह आगे बढ़ जाता है और सम्बंध सामान्य बना रह जाता है। वाह्य ऊर्जा चक्र जीवन को प्रभावित कर अपने गुणो की तरफ ले जाने का प्रयास करता रहता है। इसीलिए अपनी आवश्यकता के विषय को धारण करना चाहिए और जो विषय जीवन को अपनी प्रवृति के विपरीत ले जाने का प्रयास करे उसे धारण नहीं करना चाहिए। इसे रोकने के लिए व्यक्ति को उस तरह का विचार नहीं पैदा होने देना चाहिए। अपने विचार की दिशा दूसरी तरफ बदल देनी चाहिए और जो विषय धारण करने योग्य हो उस पर विचार करते हुए भावना की तरफ मोड़ देना चाहिए। ऐसा करके व्यक्ति अपने जीवन को सुचारू रूप से चला सकता हैं।